शिक्षा दी नहीं जा रही, बेची जा रही है

श्रद्धा ज्ञान देती है, नम्रता मान देती है,
योग्यता स्थान देती है
पर तीनों मिल जाएं तो,
व्यक्ति को हर जगह सम्मान देती है।

कितनी सत्यता नजर आती है इस बात में लेकिन यह बात अब पुरानी हो चुकी है क्योंकि गुरुकुल में जो शिक्षा दी जाती थी, उसमें शिक्षक और छात्र के बीच एक अनूठा रिश्ता था, प्यार था, भरोसा था लेकिन कहीं न कहीं आज ये सभी चीजें समाप्त हो चुकी हैं। आज शिक्षा का वह स्थान नहीं रहा जो रहना चाहिए था। शिक्षा का लगातार व्यापारीकरण हो रहा है।

जरूरी नहीं रोशनी चिरागों से ही हो,
शिक्षा से भी घर रोशन होते हैं।

शिक्षित लोगों को शिक्षा की गुणवत्ता पर सवाल करना व शिक्षा की बिगड़ती स्थिति को सुधारने के लिए प्रयास करना आज के इस पूंजीवादी दौर में इसलिए जरूरी हो गया है क्योंकि देश में हर चीज को बेचा जा रहा है, अत: शिक्षा भी आय का एक साधन बन गई है। जिस गति से प्राइवेट स्कूलों की संख्या व कारोबार बढ़ रहा है, उसी गति से सरकारी स्कूलों का ढांचा गिर रहा है। आखिर कौन जिम्मेदार है इस बिगड़ती हुई स्थिति के लिए-सरकार, न्यायालय, अध्यापक, प्रशासन या जनता?

'विद्या ददाति विनिमय' अर्थात विद्या ही विनम्रता की कुंजी है। विद्याधन एक ऐसी पूंजी है जो बांटने से बढ़ती है। विद्यार्जन से न केवल हमारे व्यक्तित्व में निखार आता है अपितु हमारे भविष्य निर्माण में भी यह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

गुरु-शिष्य परम्परा

भारतवर्ष में गुरु-शिष्य परम्परा का गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। गुरुकुल में जहां एक ओर गुरु अपने शिष्यों को भावी जीवन के लिए सर्वगुण संपन्न बनाता था, वहीं दूसरी ओर शिष्य अपने गुरु के प्रति आदर और सम्मान का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता था, पर आज के समय में यह सब बातें झूठी लगती हैं क्योंकि आज की शिक्षा ने इस परिभाषा को ही बदल कर रख दिया है। आज की शिक्षा में इन बातों का कोई महत्व नजर नहीं आता।

पुराने समय में शिक्षा ज्ञानदान की पुण्य परम्परा थी, जो कि आज महज पैसा एकत्र करने की योजना बन कर रह गई है। पहले शिक्षा नि:स्वार्थ सेवा थी जो सर्वजन हिताय को दर्शाती थी। यही कारण था कि उन दिनों योग के छात्रों की अधिकता थी जो अपने राष्ट्र एवं समाज को अपने-अपने मजबूत कंधों का सहारा देते थे। पहले शिक्षा उपहार स्वरूप थी, आज वही सिर्फ और सिर्फ व्यवसाय का स्रोत है। आज शिक्षा विश्व बाजार में इतने बड़े व्यवसाय के रूप में परिवर्तित हो गई है जो सच में एक करिश्मा लगता है।

हमारे देश में शिक्षा का क्या महत्व है, यह किसी को बताने की आवश्यकता नहीं है। भारत के करोड़ों बच्चे हर सुबह अपना बस्ता लेकर स्कूल जाते हैं। हर माता-पिता की तमन्ना होती है कि उनका बच्चा पढ़-लिख कर एक काबिल इंसान बने। उनके सपनों को पूरा करने के लिए स्कूल और हमारे देश की शिक्षा प्रणाली बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। आज से कुछ वर्षों पूर्व 'फैले विद्या चानण होए' का महान आदर्श लेकर चल रही शैक्षिक संस्थाओं का स्वरूप लाभदायक था क्योंकि यह स्वार्थ, फरेब, धोखा, लालच आदि से दूर होकर सत्य, नेकी, भलाई, ईमानदारी तथा नैतिक मूल्यों से जुड़ा हुआ था। शैक्षिक संस्थाएं शिक्षा प्रदान करने की आरम्भिक भूमिका को पूरी ईमानदारी से निभा रही थीं। इस महान कार्य में जुड़े गुरु अथवा अध्यापक भी पूरी ईमानदारी से अपना कर्त्तव्य जाति-पाति, ऊंच-नीच, लिंग, धर्म, नस्ल आदि के विरोध के भेद से ऊपर उठकर निभाते थे। शिक्षा नीति नए वृक्ष में उभर कर सामने आई लेकिन आज शिक्षा प्रणाली को देखकर बहुत दुख होता है कि शिक्षा बाजार में बेची जाने वाली एक वस्तु बन गई है। बड़ा दुख होता है ऐसी दयनीय स्थिति को देखकर:

प्रि. डा. मोहन लाल शर्मा

देखो लोगो यह पाप हो रहा है
दुराचार हो रहा है,
दुनिया का क्या बनेगा
जहां पर शिक्षा का भी व्यापार हो रहा है।

व्यापार से भाव वस्तुओं को बेचना या खरीदना है पर क्या शिक्षा भी कोई बेचने की चीज है? जी हां! यह बात सुनने में जितनी अजीब लग रही है पर वास्तविकता में यह आज का एक कड़वा सत्य है। अंग्रेजों के समय से ही भारत में गुरु-शिष्य परम्परा का हनन होना आरम्भ हो गया था। अंग्रेजों की नीति तब सफल हुई जब अंग्रेजों ने भारत में अपने फायदे के लिए स्कूल-कालेज खोलने आरम्भ किए क्योंकि उन्हें पढ़े-लिखे क्लर्क चाहिएं थे। इस तरह शिक्षा का व्यापारीकरण आरम्भ हो गया जो अब तक निरंतर जारी है तथा बढ़ता ही जा रहा है। हालात बदतर से बदतर हो रहे हैं। आजकल शिक्षा दी नहीं जा रही बल्कि कहा जा सकता है कि बेची जा रही है।

सच्ची बातों को जान लेने का नाम ज्ञान है,
जो अपनी मेहनत से कर दिखाए वही महान है।

लेकिन आजकल शिक्षा प्राप्त करने के लिए दिमाग से अधिक पैसा महत्व रखता है। अमीर लोग बिना कोई मेहनत किए ही शिक्षा ले रहे हैं। वे अपने बच्चों को पैसों से डिग्रियां खरीद कर दे देते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण भ्रष्टाचार है। कई यूनिवर्सिटियां बिना पढ़े पैसों के बदले डिग्रियां दे देती हैं। इनकी ओर से स्थान-स्थान पर अपने शिक्षा केन्द्र खोले जा रहे हैं जो बिना किसी रोक-टोक के चलाए जाते हैं। यह सब कुछ ही शिक्षा को व्यवसायी बना रहा है। सरकार की ओर से 8वीं तक फेल न करने की तथा बिना किसी शर्त पास करने से बच्चों का भविष्य खतरे में जा रहा है। आज विद्या हासिल करने का मकसद केवल कक्षाओं को पास करना ही बन गया है। ज्ञान हासिल करने की कोई कोशिश नहीं करता।

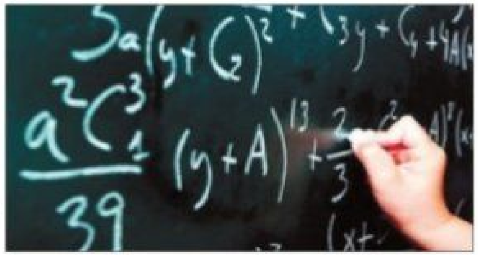

विद्या के व्यापारी इस कारण ही दिनों-दिन अमीर बनते जा रहे हैं क्योंकि वे बच्चों को किसी भी हालत में पास कराने के लिए मोटी रकम ले रहे हैं। निजी शिक्षा के संचालक मनमर्जी से पैसे वसूल रहे हैं। जहां एक ओर उनकी फीस बढ़ती जाती है, वहीं शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। पहले मोंटिसरी जैसे छोटे-छोटे निजी स्कूलों का खुलना आरम्भ हुआ। फिर उनका स्थान बड़ी-बड़ी गगनचुंबी इमारतों ने ले लिया। निजी स्कूलों का जैसे सैलाब सा आ गया है। अनेक स्तरों पर नगरों-महानगरों के होटल की तरह साधारण, एक सितारा, 2 सितारा व 5 सितारा जैसे स्कूल खुलने शुरू हो गए। बड़े-बड़े डाक्टर, राजनेताओं ने अपने धंधों को छोड़कर स्कूल खोल लिए लेकिन इस दयनीय दशा के पीछे आखिर जिम्मेदार कौन है?

मैकाले का भाषण

इन सब के पीछे जिम्मेदार है मैकाले का वह ब्रिटिश संसद में दिया गया भाषण जिसमें उन्होंने कहा था, मैंने पूरे भारत की यात्रा की है और पाया कि वहां पर कोई भी अधिकारी या चोर नहीं है। वहां सभी उच्च नैतिक आदर्श वाले लोग बसते हैं। मुझे नहीं लगता कि हम उस देश को जीत सकते हैं जब तक कि हम उस देश की रीढ़ की हड्डी यानी उसकी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत पर वार नहीं करेंगे।

मैं प्रस्तावित करता हूं कि हमें भारत का पुराना सुदृढ़ शिक्षा तंत्र बदलना होगा। हमें भारत के जनमानस को यह सोचने पर मजबूर करना होगा कि विदेशी एवं अंग्रेज उनसे श्रेष्ठ हैं। तब वे अपना स्वाभिमान एवं संस्कृति भूल जाएंगे और हम जैसा चाहेंगे वैसे भारत पर शासन कर सकेंगे।

आज मैकाले की अवधारणा सही होती जा रही है। व्यापारी लोग हम पर व्यापार कर रहे हैं और अपनी मर्जी से हमें नचा रहे हैं। इसकी तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसका सबसे बड़ा कारण जो मुझे नजर आता है वह सरकार की लापरवाही है क्योंकि विद्या के ऐसे हालात बन गए हैं कि आज विद्या बांटने के स्थान पर बिकने लगी है। विद्यार्थी इसे ग्रहण करने के स्थान पर खरीदने लग गए हैं। इसके लिए नए कानून बनाए तो गए हैं लेकिन उन कानूनों को लागू नहीं किया गया। एक अध्यापक जब 50 विद्यार्थियों की कक्षा में 45 डिग्री तापमान में पसीने से लथपथ हो रहा होता है तो शायद उसके लिए ए.सी. की ठंडक में बैठकर बनाए उन कानूनों को याद रखना मुश्किल ही होता है लेकिन मैं इस स्थिति को देखकर बहुत चिंतित हूं क्योंकि मुझे अपना समय याद आ जाता है और मैं अब भी

अपने गुरु को प्रणाम करता हूं
जिनसे मैंने यह ज्ञान पाया है,
माता पिता और गुरु के चरणों में,
अपना शीश झुकाया है।

drmlsharma5@gmail.com

पंजाब केसरी
लुधियाना, R.N.I. Regd. No. 10117/65
जालन्धर हैड ऑफिस : 0181-5067200/1, 5030000/1, 2280104/7.
Toll Free No. 18001371800
फैक्स : 0181-2280111-14, 5063750, 5030036.
विज्ञापन : 0181-5067249,5067206,5067263,5067253.
advt@punjabkesari.in, news@thepunjabkesari.com
सर्कुलेशन : 0181-5067251, 98151-65655.
लुधियाना कार्यालय : 0161-5092200, 5092203, 5092204.
फैक्स : 0161-5092201/2.
स्वत्वाधिकारी हिंद समाचार लिमिटेड सिविल लाइन्स, जालन्धर के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक आर.एस. जोशी* द्वारा जगत विजय प्रिंटर्स, बी-71, फेज-VIII, इंडस्ट्रीयल फोकल प्वाइंट, लुधियाना से मुद्रित तथा सिविल लाइन्स जालन्धर से प्रकाशित।
* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी।

ਸਿੱਖਿਆ ਦਿੱਤੀ ਨਹੀਂ ਜਾ ਰਹੀ, ਵੇਚੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ

ਸ਼ਰਧਾ ਗਿਆਨ ਦੇਤੀ ਹੈ, ਨਮਰਤਾ ਮਾਨ ਦੇਤੀ ਹੈ,
ਯੋਗਯਤਾ ਸਥਾਨ ਦੇਤੀ ਹੈ
ਪਰ ਤੀਨੋਂ ਮਿਲ ਜਾਏਂ ਤੋ,
ਵਿਅਕਤੀ ਕੋ ਹਰ ਜਗਹ ਸਨਮਾਨ ਦੇਤੀ ਹੈਂ।

ਕਿੰਨੀ ਸੱਚਾਈ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਇਸ ਗੱਲ 'ਚ ਪਰ ਇਹ ਗੱਲ ਹੁਣ ਪੁਰਾਣੀ ਹੋ ਚੁੱਕੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਗੁਰੂਕੁਲ 'ਚ ਜੋ ਸਿੱਖਿਆ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ, ਉਸ 'ਚ ਅਧਿਆਪਕ ਅਤੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਵਿਚਾਲੇ ਇਕ ਅਨੋਖਾ ਰਿਸ਼ਤਾ ਸੀ, ਪਿਆਰ ਸੀ, ਭਰੋਸਾ ਸੀ ਪਰ ਕਿਤੇ ਨਾ ਕਿਤੇ ਅੱਜ ਇਹ ਸਾਰੀਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਖਤਮ ਹੋ ਚੁੱਕੀਆਂ ਹਨ। ਅੱਜ ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ ਉਹ ਸਥਾਨ ਨਹੀਂ ਰਿਹਾ, ਜੋ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਸੀ। ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ ਲਗਾਤਾਰ ਵਪਾਰੀਕਰਨ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਜ਼ਰੂਰੀ ਨਹੀਂ ਰੋਸ਼ਨੀ ਚਿਰਾਗੋਂ ਸੇ ਹੀ ਹੋ
ਸਿਕਸ਼ਾ ਸੇ ਭੀ ਘਰ ਰੋਸ਼ਨ ਹੋਤੇ ਹੈਂ।

ਪੜ੍ਹੇ-ਲਿਖੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸਿੱਖਿਆ ਦੀ ਗੁਣਵੱਤਾ 'ਤੇ ਸਵਾਲ ਕਰਨਾ ਅਤੇ ਸਿੱਖਿਆ ਦੀ ਵਿਗੜਦੀ ਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਸੁਧਾਰਨ ਲਈ ਯਤਨ ਕਰਨਾ, ਅੱਜ ਦੇ ਇਸ ਪੂੰਜੀਵਾਦ ਦੇ ਦੌਰ 'ਚ ਇਸ ਲਈ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਦੇਸ਼ 'ਚ ਹਰ ਚੀਜ਼ ਨੂੰ ਵੇਚਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ ਸਿੱਖਿਆ ਵੀ ਆਮਦਨ ਦਾ ਇਕ ਸਾਧਨ ਬਣ ਗਈ ਹੈ। ਜਿਸ ਰਫਤਾਰ ਨਾਲ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਅਤੇ ਕਾਰੋਬਾਰ ਵਧ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਉਸੇ ਰਫਤਾਰ ਨਾਲ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦਾ ਢਾਂਚਾ ਡਿਗ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਆਖਿਰ ਕੌਣ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰ ਹੈ ਇਸ ਵਿਗੜਦੀ ਸਥਿਤੀ ਲਈ। ਸਰਕਾਰ, ਅਦਾਲਤ, ਅਧਿਆਪਕ, ਪ੍ਰਸ਼ਾਸਨ ਜਾਂ ਜਨਤਾ?

ਵਿੱਦਿਆ ਹੀ ਨਿਮਰਤਾ ਦੀ ਕੁੰਜੀ ਹੈ। ਵਿੱਦਿਆ ਦਾ ਧਨ ਇਕ ਅਜਿਹੀ ਪੂੰਜੀ ਹੈ, ਜੋ ਵੰਡਣ ਨਾਲ ਵਧਦੀ ਹੈ। ਵਿੱਦਿਆ ਹਾਸਿਲ ਕਰਨ ਨਾਲ ਨਾ ਸਿਰਫ ਸਾਡੀ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤ 'ਚ ਨਿਖਾਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ, ਸਗੋਂ ਸਾਡੇ ਭਵਿੱਖੀ ਨਿਰਮਾਣ 'ਚ ਵੀ ਇਹ ਇਕ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਉਂਦੀ ਹੈ।

ਗੁਰੂ-ਚੇਲੇ ਦੀ ਪ੍ਰੰਪਰਾ

ਭਾਰਤ 'ਚ ਗੁਰੂ-ਚੇਲੇ ਦੀ ਪ੍ਰੰਪਰਾ ਦਾ ਮਾਣਮੱਤਾ ਇਤਿਹਾਸ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਗੁਰੂਕੁਲ 'ਚ ਜਿਥੇ ਇਕ ਪਾਸੇ ਗੁਰੂ ਆਪਣੇ ਚੇਲਿਆਂ ਨੂੰ ਭਵਿੱਖ ਦੇ ਜੀਵਨ ਲਈ ਸਰਵਗੁਣ ਸੰਪੰਨ ਬਣਾਉਂਦਾ ਸੀ, ਉਥੇ ਹੀ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਚੇਲਾ ਆਪਣੇ ਗੁਰੂ ਪ੍ਰਤੀ ਆਦਰ ਅਤੇ ਸਨਮਾਨ ਦੀ ਅਨੋਖੀ ਉਦਾਹਰਣ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਸੀ ਪਰ ਅੱਜ ਦੇ ਸਮੇਂ 'ਚ ਇਹ ਸਭ ਗੱਲਾਂ ਝੂਠੀਆਂ ਲੱਗਦੀਆਂ ਹਨ ਕਿਉਂਕਿ ਅੱਜ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਨੇ ਇਸ ਪਰਿਭਾਸ਼ਾ ਨੂੰ ਹੀ ਬਦਲ ਕੇ ਰੱਖ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਅੱਜ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ 'ਚ ਇਨ੍ਹਾਂ ਗੱਲਾਂ ਦਾ ਕੋਈ ਮਹੱਤਵ ਨਜ਼ਰ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦਾ। ਪੁਰਾਣੇ ਸਮੇਂ 'ਚ ਸਿੱਖਿਆ ਗਿਆਨ ਦਾਨ ਦੀ ਪੁੰਨ ਵਾਲੀ ਪ੍ਰੰਪਰਾ ਸੀ, ਜੋ ਅੱਜ ਸਿਰਫ ਪੈਸਾ ਇਕੱਠਾ ਕਰਨ ਦੀ ਯੋਜਨਾ ਬਣ ਕੇ ਰਹਿ ਗਈ ਹੈ। ਪਹਿਲਾਂ ਸਿੱਖਿਆ ਸੁਆਰਥ ਰਹਿਤ ਸੇਵਾ ਸੀ, ਜੋ ਸਭ ਦੇ ਹਿੱਤਾਂ ਨੂੰ ਦਰਸਾਉਂਦੀ ਸੀ। ਇਹੋ ਕਾਰਨ ਸੀ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਿਨਾਂ 'ਚ ਯੋਗ ਦੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੀ ਬਹੁਤਾਤ ਸੀ, ਜੋ ਆਪਣੇ ਰਾਸ਼ਟਰ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਆਪਣੇ-ਆਪਣੇ ਮਜ਼ਬੂਤ ਮੋਢਿਆਂ ਦਾ ਸਹਾਰਾ ਦਿੰਦੇ ਸਨ। ਪਹਿਲਾਂ ਸਿੱਖਿਆ ਤੋਹਫੇ ਦਾ ਸਰੂਪ ਸੀ, ਅੱਜ ਉਹ ਸਿਰਫ ਅਤੇ ਸਿਰਫ ਕਾਰੋਬਾਰ ਦਾ ਸੋਮਾ ਹੈ। ਅੱਜ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਸ਼ਵ ਬਾਜ਼ਾਰ 'ਚ ਇੰਨੇ ਵੱਡੇ ਕਾਰੋਬਾਰ ਦੇ ਰੂਪ 'ਚ ਤਬਦੀਲ ਹੋ ਗਈ ਹੈ, ਜੋ ਅਸਲ 'ਚ ਇਕ ਕ੍ਰਿਸ਼ਮਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ।

ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ 'ਚ ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ ਕੀ ਮਹੱਤਵ ਹੈ, ਇਹ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਦੱਸਣ ਦੀ ਲੋੜ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਭਾਰਤ ਦੇ ਕਰੋੜਾਂ ਬੱਚੇ ਹਰੇਕ ਸਵੇਰ ਆਪਣਾ ਬਸਤਾ ਲੈ ਕੇ ਸਕੂਲ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਹਰੇਕ ਮਾਤਾ-ਪਿਤਾ ਦੀ ਤਮੰਨਾ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਬੱਚਾ ਪੜ੍ਹ-ਲਿਖ ਕੇ ਇਕ

ਪ੍ਰਿੰ. ਡਾ. ਮੋਹਨ ਲਾਲ ਸ਼ਰਮਾ

ਕਾਬਿਲ ਇਨਸਾਨ ਬਣੇ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸੁਪਨਿਆਂ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰਨ ਲਈ ਸਕੂਲ ਅਤੇ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਬਹੁਤ ਵੱਡੀ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਅੱਜ ਤੋਂ ਕੁਝ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ 'ਫੈਲੇ ਵਿੱਦਿਆ ਚਾਨਣ ਹੋਏ' ਦਾ ਮਹਾਨ ਆਦਰਸ਼ ਲੈ ਕੇ ਚੱਲ ਰਹੀਆਂ ਵਿੱਦਿਅਕ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਦਾ ਸਰੂਪ ਲਾਭਦਾਇਕ ਸੀ ਕਿਉਂਕਿ ਸੁਆਰਥ, ਫਰੇਬ, ਧੋਖਾ, ਲਾਲਚ ਆਦਿ ਤੋਂ ਦੂਰ ਹੋ ਕੇ ਸੱਚਾਈ, ਨੇਕੀ, ਭਲਾਈ, ਈਮਾਨਦਾਰੀ ਅਤੇ ਨੈਤਿਕ ਕਦਰਾਂ-ਕੀਮਤਾਂ ਨਾਲ ਜੁੜਿਆ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਵਿੱਦਿਅਕ ਸੰਸਥਾਵਾਂ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਨ ਦੀ ਮੁੱਢਲੀ ਭੂਮਿਕਾ ਨੂੰ ਪੂਰੀ ਈਮਾਨਦਾਰੀ ਨਾਲ ਨਿਭਾਅ ਰਹੀਆਂ ਸਨ। ਇਸ ਮਹਾਨ ਕੰਮ 'ਚ ਜੁੜੇ ਗੁਰੂ ਜਾਂ ਅਧਿਆਪਕ ਵੀ ਪੂਰੀ ਈਮਾਨਦਾਰੀ ਨਾਲ ਜਾਤ-ਪਾਤ, ਊਚ-ਨੀਚ, ਲਿੰਗ, ਧਰਮ, ਨਸਲ ਆਦਿ ਦੇ ਵਿਰੋਧ ਦੇ ਭੇਦ ਤੋਂ ਉਪਰ ਉੱਠ ਕੇ ਆਪਣਾ ਫਰਜ਼ ਨਿਭਾਉਂਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਸਿੱਖਿਆ ਨੀਤੀ ਨਵੇਂ ਦਰੱਖਤ ਦੇ ਰੂਪ 'ਚ ਉੱਭਰ ਕੇ ਸਾਹਮਣੇ ਆਈ ਪਰ ਅੱਜ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਬਹੁਤ ਦੁੱਖ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸਿੱਖਿਆ ਇਕ ਬਾਜ਼ਾਰ ਵਿਚ ਵੇਚੀ ਜਾਣ ਵਾਲੀ ਚੀਜ਼ ਬਣ ਗਈ ਹੈ। ਜੋ ਚੀਜ਼ ਵੇਚੀ ਨਹੀਂ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਸੀ, ਉਹ ਵੀ ਅੱਜ ਬਾਜ਼ਾਰ 'ਚ ਮਾਲ ਦੇ ਭਾਅ ਵਿਕ ਰਹੀ ਹੈ। ਬਹੁਤ ਦੁੱਖ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਅਜਿਹੀ ਤਰਸਯੋਗ ਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ।

ਦੇਖੋ ਲੋਗੋ ਯਹ ਪਾਪ ਹੋ ਰਹਾ ਹੈ,
ਦੁਰਾਚਾਰ ਹੋ ਰਹਾ ਹੈ,
ਦੁਨੀਆ ਕਾ ਤੋ ਕਿਆ ਬਨੇਗਾ,
ਜਹਾਂ ਪਰ ਸਿਕਸ਼ਾ ਕਾ ਭੀ ਵਪਾਰ ਹੋ ਰਹਾ ਹੈ।

ਵਪਾਰ ਤੋਂ ਭਾਵ ਵਸਤੂਆਂ ਨੂੰ ਵੇਚਣਾ ਜਾਂ ਖਰੀਦਣਾ ਹੈ ਪਰ ਕੀ ਸਿੱਖਿਆ ਵੀ ਕੋਈ ਵੇਚਣ ਵਾਲੀ ਚੀਜ਼ ਹੈ? ਜੀ ਹਾਂ, ਇਹ ਗੱਲ ਸੁਣਨ 'ਚ ਜਿੰਨੀ ਅਜੀਬ ਲੱਗ ਰਹੀ ਹੈ ਪਰ ਅਸਲ 'ਚ ਇਹ ਅੱਜ ਦਾ ਇਕ ਕੌੜਾ ਸੱਚ ਹੈ। ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਦੇ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਹੀ ਭਾਰਤ ਵਿਚ 'ਗੁਰੂ-ਚੇਲਾ' ਪ੍ਰੰਪਰਾ ਦੀ ਉਲੰਘਣਾ ਹੋਣੀ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਗਈ ਸੀ। ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਦੀ ਨੀਤੀ ਉਦੋਂ ਸਫਲ ਹੋਈ, ਜਦੋਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਭਾਰਤ 'ਚ ਆਪਣੇ ਫਾਇਦੇ ਲਈ ਸਕੂਲ-ਕਾਲਜ ਖੋਲ੍ਹਣੇ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੇ ਕਿਉਂਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹੇ-ਲਿਖੇ ਕਲਰਕ ਚਾਹੀਦੇ ਸਨ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ ਵਪਾਰੀਕਰਨ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਗਿਆ, ਜੋ ਹੁਣ ਤਕ ਲਗਾਤਾਰ ਜਾਰੀ ਹੈ ਅਤੇ ਵਧਦਾ ਹੀ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਹਾਲਾਤ ਬਦ ਤੋਂ ਬਦਤਰ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ। ਅੱਜਕਲ ਸਿੱਖਿਆ ਦਿੱਤੀ ਨਹੀਂ ਜਾ ਰਹੀ, ਸਗੋਂ ਕਿਹਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਵੇਚੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ।

ਸੱਚੀ ਬਾਤੋਂ ਕੋ ਜਾਨ ਲੇਨੇ ਕਾ ਨਾਮ ਗਿਆਨ ਹੈ,
ਜੋ ਅਪਨੀ ਮੇਹਨਤ ਸੇ ਕਰ ਦਿਖਾਏ ਵਹੀ ਮਹਾਨ ਹੈ।

ਪਰ ਅੱਜਕਲ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ ਦਿਮਾਗ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਪੈਸਾ ਮਹੱਤਵ ਰੱਖਦਾ ਹੈ। ਅਮੀਰ ਲੋਕ ਬਿਨਾਂ ਕੋਈ ਮਿਹਨਤ ਕੀਤੇ ਹੀ ਸਿੱਖਿਆ ਲੈ ਰਹੇ ਹਨ। ਉਹ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪੈਸਿਆਂ ਨਾਲ ਡਿਗਰੀਆਂ ਖਰੀਦ ਕੇ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਕਾਰਨ ਭ੍ਰਿਸ਼ਟਾਚਾਰ ਹੈ। ਕਈ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀਆਂ ਬਿਨਾਂ ਪੜ੍ਹੇ ਪੈਸਿਆਂ ਦੇ ਬਦਲੇ ਡਿਗਰੀਆਂ ਦੇ ਦਿੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਲੋਂ ਜਗ੍ਹਾ-ਜਗ੍ਹਾ 'ਤੇ ਆਪਣੇ ਸਿੱਖਿਆ ਕੇਂਦਰ ਖੋਲ੍ਹੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ, ਜੋ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਰੋਕ-ਟੋਕ ਦੇ ਚਲਾਏ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਹੀ ਸਿੱਖਿਆ ਨੂੰ ਕਾਰੋਬਾਰੀ ਬਣਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਸਰਕਾਰ ਵਲੋਂ 8ਵੀਂ ਤਕ ਫੇਲ ਨਾ ਕਰਨ ਦੀ ਅਤੇ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਸ਼ਰਤ ਪਾਸ ਕਰਨ ਨਾਲ ਬੱਚਿਆਂ ਦਾ ਭਵਿੱਖ ਖਤਰੇ 'ਚ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਅੱਜ ਵਿੱਦਿਆ ਹਾਸਿਲ ਕਰਨ ਦਾ ਮਕਸਦ ਸਿਰਫ ਕਲਾਸਾਂ ਪਾਸ ਕਰਨਾ ਹੀ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ। ਗਿਆਨ ਹਾਸਿਲ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਈ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ। ਵਿੱਦਿਆ ਦੇ ਵਪਾਰੀ ਇਸ ਕਾਰਨ ਹੀ ਦਿਨੋ-ਦਿਨ ਅਮੀਰ ਬਣਦੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਵੀ ਹਾਲਤ 'ਚ ਪਾਸ ਕਰਵਾਉਣ ਲਈ ਮੋਟੀ ਰਕਮ ਲੈ ਰਹੇ ਹਨ। ਨਿੱਜੀ ਵਿੱਦਿਅਕ ਸੰਸਥਾ ਦੇ ਸੰਚਾਲਕ ਮਨਮਰਜ਼ੀ ਨਾਲ ਪੈਸੇ ਵਸੂਲ ਰਹੇ ਹਨ। ਜਿਥੇ ਇਕ ਪਾਸੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਫੀਸ ਵਧਦੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਉਥੇ ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ ਪੱਧਰ ਡਿਗਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਪਹਿਲਾਂ ਮੋਂਟੇਸਰੀ ਵਰਗੇ ਛੋਟੇ-ਛੋਟੇ ਨਿੱਜੀ ਸਕੂਲ ਖੁੱਲ੍ਹਣੇ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਏ, ਫਿਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਥਾਂ ਵੱਡੀਆਂ-ਵੱਡੀਆਂ ਗਗਨਚੁੰਬੀ ਇਮਾਰਤਾਂ ਨੇ ਲੈ ਲਈ। ਨਿੱਜੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦਾ ਜਿਵੇਂ ਹੜ੍ਹ ਜਿਹਾ ਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਅਨੇਕ ਪੱਧਰਾਂ 'ਤੇ ਨਗਰਾਂ-ਮਹਾਨਗਰਾਂ ਦੇ ਹੋਟਲਾਂ ਵਾਂਗ ਸਾਧਾਰਨ, ਇਕ ਸਿਤਾਰਾ, ਦੋ ਸਿਤਾਰਾ ਅਤੇ ਪੰਜ ਸਿਤਾਰਾ ਵਰਗੇ ਸਕੂਲ ਖੁੱਲ੍ਹਣੇ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਗਏ ਹਨ। ਵੱਡੇ-ਵੱਡੇ ਡਾਕਟਰ, ਰਾਜਨੇਤਾਵਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਧੰਦਿਆਂ ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਸਕੂਲ ਖੋਲ੍ਹ ਲਏ ਹਨ ਪਰ ਇਸ ਤਰਸਯੋਗ ਹਾਲਤ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਆਖਿਰ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰ ਕੌਣ ਹੈ?

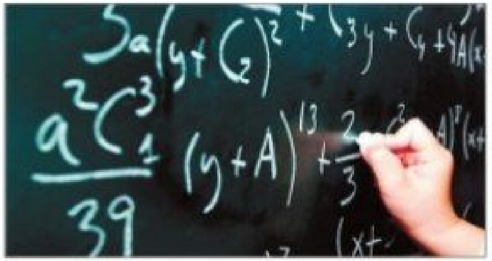

ਮੈਕਾਲੇ ਦਾ ਭਾਸ਼ਣ

ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਭ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰ ਹੈ ਮੈਕਾਲੇ ਦਾ ਉਹ ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਸੰਸਦ 'ਚ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਭਾਸ਼ਣ, ਜਿਸ 'ਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ ਸੀ-ਮੈਂ ਪੂਰੇ ਭਾਰਤ ਦੀ ਯਾਤਰਾ ਕੀਤੀ ਹੈ ਅਤੇ ਦੇਖਿਆ ਕਿ ਉਥੇ ਕੋਈ ਵੀ ਅਧਿਕਾਰੀ ਜਾਂ ਚੋਰ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਉਥੇ ਸਾਰੇ ਉੱਚ ਨੈਤਿਕ ਆਦਰਸ਼ ਵਾਲੇ ਲੋਕ ਵਸਦੇ ਹਨ। ਮੈਨੂੰ ਨਹੀਂ ਲੱਗਦਾ ਕਿ ਅਸੀਂ ਉਸ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਜਿੱਤ ਸਕਦੇ ਹਾਂ, ਜਦੋਂ ਤਕ ਕਿ ਅਸੀਂ ਉਸ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਰੀੜ੍ਹ ਦੀ ਹੱਡੀ, ਭਾਵ ਉਸ ਦੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤਕ ਅਤੇ ਅਧਿਆਤਮਕ ਵਿਰਾਸਤ ਉੱਤੇ ਵਾਰ ਨਹੀਂ ਕਰਾਂਗੇ। ਮੈਂ ਪ੍ਰਸਤਾਵਿਤ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਸਾਨੂੰ ਭਾਰਤ ਦਾ ਪੁਰਾਣਾ ਮਜ਼ਬੂਤ ਸਿੱਖਿਆ ਤੰਤਰ ਬਦਲਣਾ ਹੋਵੇਗਾ। ਸਾਨੂੰ ਭਾਰਤ ਦੀ ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਇਹ ਸੋਚਣ ਲਈ ਮਜਬੂਰ ਕਰਨਾ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਅਤੇ ਅੰਗਰੇਜ਼ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਹਨ, ਫਿਰ ਉਹ ਆਪਣਾ ਸਵੈਮਾਣ ਅਤੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਭੁੱਲ ਜਾਣਗੇ ਤੇ ਫਿਰ ਅਸੀਂ ਜਿਵੇਂ ਚਾਹਾਂਗੇ, ਉਵੇਂ ਹੀ ਭਾਰਤ 'ਤੇ ਸ਼ਾਸਨ ਕਰ ਸਕਾਂਗੇ।

ਅੱਜ ਮੈਕਾਲੇ ਦੀ ਧਾਰਨਾ ਸਹੀ ਹੁੰਦੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਵਪਾਰੀ ਲੋਕ ਸਾਡੇ 'ਤੇ ਵਪਾਰ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ ਅਤੇ ਆਪਣੀ ਮਰਜ਼ੀ ਨਾਲ ਸਾਨੂੰ ਨਚਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਸ ਵੱਲ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਧਿਆਨ ਦੇਣ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਇਸ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਕਾਰਨ ਜੋ ਮੈਨੂੰ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ, ਉਹ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਲਾਪਰਵਾਹੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਵਿੱਦਿਆ ਦੇ ਅਜਿਹੇ ਹਾਲਾਤ ਬਣ ਗਏ ਹਨ ਕਿ ਅੱਜ ਵਿੱਦਿਆ ਵੰਡਣ ਦੀ ਥਾਂ 'ਤੇ ਵਿਕਣ ਲੱਗੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਨੂੰ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰਨ ਦੀ ਥਾਂ 'ਤੇ ਖਰੀਦਣ ਲੱਗ ਪਏ ਹਨ। ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਨਵੇਂ ਕਾਨੂੰਨ ਬਣਾਏ ਤਾਂ ਗਏ ਹਨ ਪਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਨੂੰ ਲਾਗੂ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਅਖੀਰ ਵਿਚ ਮੈਂ ਕਹਿ ਰਿਹਾ ਹਾਂ ਕਿ ਅੱਜਕਲ ਸਿੱਖਿਆ ਦਿੱਤੀ ਨਹੀਂ ਜਾ ਰਹੀ, ਵੇਚੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ।

ਪਰ ਮੈਂ ਇਸ ਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਬਹੁਤ ਚਿੰਤਤ ਹਾਂ ਕਿਉਂਕਿ ਮੈਨੂੰ ਆਪਣਾ ਸਮਾਂ ਯਾਦ ਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਮੈਂ ਅਜੇ ਵੀ-

ਅਪਨੇ ਗੁਰੂ ਕੋ ਪ੍ਰਣਾਮ ਕਰਤਾ ਹੂੰ,
ਜਿਸਸੇ ਮੈਂਨੇ ਯਹ ਗਿਆਨ ਪਾਇਆ ਹੈ,
ਮਾਤਾ-ਪਿਤਾ ਔਰ ਗੁਰੂ ਕੇ ਚਰਣੋਂ ਮੇਂ,
ਅਪਨਾ ਸ਼ੀਸ਼ ਝੁਕਾਇਆ ਹੈ।

(drmlsharma5@gmail.com)

ਜਗ ਬਾਣੀ
ਜਲੰਧਰ, R.N.I. regd. no. 30794/78 ਪੋਸਟਲ ਰਜਿ. ਨੰ. PB/JL-193/2018-20
ਜਲੰਧਰ ਹੈੱਡ ਆਫਿਸ : 0181-5030000/1, 2280104/7, 5067200/1.
ਟੋਲ ਫ੍ਰੀ ਨੰਬਰ : 18001371800
ਫੈਕਸ : 0181-2280111/114, 5063750, 5030036
ਇਸ਼ਤਿਹਾਰ : 0181-5067249, 5067206, 5067263, 5067253
advt@punjabkesari.in, news@thepunjabkesari.com
ਸਰਕੂਲੇਸ਼ਨ : 98151-65655, 0181-5067251
ਮਾਲਕ ਹਿੰਦ ਸਮਾਚਾਰ ਲਿਮਟਿਡ ਸਿਵਲ ਲਾਈਨਜ਼ ਜਲੰਧਰ ਦੇ ਲਈ ਮੁਦਰਕ, ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ ਅਤੇ ਸੰਪਾਦਕ ਆਰ. ਐੱਸ. ਜੌਲੀ * ਵਲੋਂ ਪੰਜਾਬ ਕੇਸਰੀ ਪ੍ਰਿੰਟਿੰਗ ਪ੍ਰੈੱਸ, ਸਵਦੇਸ਼ ਪ੍ਰਿੰਟਿੰਗ ਪ੍ਰੈੱਸ, ਪ੍ਰੋਪਰਾਈਟਰ ਵਿਜੇ ਪ੍ਰਿੰਟਿੰਗ ਪ੍ਰੈੱਸ, ਜਲੰਧਰ ਤੋਂ ਛਪਵਾ ਕੇ ਸਿਵਲ ਲਾਈਨਜ਼ ਜਲੰਧਰ ਤੋਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਕੀਤਾ।
*ਇਸ ਅੰਕ ਵਿਚ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਖ਼ਬਰਾਂ ਦੀ ਚੋਣ ਅਤੇ ਸੰਪਾਦਨ ਵਾਸਤੇ ਪੀ.ਆਰ.ਬੀ. ਐਕਟ ਦੇ ਅਧੀਨ ਜਵਾਬਦੇਹ।